Dr. Pawan Kumar Yadav

# VOTING BEHAVIOUR

## ( मतदान व्यवहार )

वर्तमान युग लोकतंत्र का युग है। इस लोकतंत्र में जनता को अनेक राजनीतिक अधिकार दिये गये हैं। मताधिकार और निर्वाचन का अधिकार उनमें प्रमुख हैं। राज्यों की विशालता के कारण प्रतिनिध्यात्मक प्रणाली का विकास हुआ है। इस प्रणाली में जनता के प्रतिनिधि शासन संचालन करते हैं। जनता अपने प्रतिनिधियों का निर्वाचन मतदान के द्वारा करती है। मतदान व्यवहार का अध्ययन व्यवहारवादी राजनीति में आता है। "Eldersveld" पहले वैज्ञानिक हैं जिन्होंने इसे परिभाषित किया।

Def$^n$ :— डॉ॰ लवानिया का मत है कि मतदान व्यवहार से तात्पर्य मतदाता के चुनाव व्यवहार से है जिसका प्रदर्शन वह चुनाव अभियान या मतदान में करता है। मतदान व्यवहार की कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं —

पॉल एच॰ एपलबी के अनुसार, "मतदान व्यवहार व्यक्तियों का सरकार से सीधा संबंध"

कार्ल जे॰ फ्रेड्रिक के शब्दों में, "यह प्रजातांत्रिक शासन को वैधता प्रदान करने की प्रक्रिया में एक समस्या है अर्थात् मतदान करते समय व्यक्ति सरकार को कार्य करने के लिए वैधता प्रदान करता है।"

## Determinants of voting behaviour :—

भारत के संविधान में व्यस्क सार्वजनिक मताधिकार प्रदान किया गया है! पहले मतदाता की न्यूनतम आयु 21 वर्ष थी। जो संविधान में 61 वें संशोधन द्वारा 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष कर दी गयी है। यह प्रावधान 28 मार्च, 1989 से प्रभावी हो गया है। भारतीय मतदाताओं के मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले तत्व निम्नलिखित हैं :—

1.) जातिवाद (Caste) → भारतीय मतदान में जातिवाद का प्रभाव शुरू से ही देखा जा सकता है। इसमें मतदाता उम्मीदवार की योग्यता को नही देखता बल्कि जाति के आधार पर मतदान करता है। जाति के आधार पर मतदान स्वस्थ प्रजातंत्र के लिए खतरा है। यह उत्तर भारत में पाया जाता है।

2.) धर्म (Religion) → भारत में धर्म के आधार पर भी मतदान किया जाता है!

3.) भाषा (Language) → भारत में भाषा भी मतदाता को प्रभावित करती है। दक्षिण भारत में जनता पार्टी या भाजपा को इसलिए स्वीकार नहीं किया

जाता कि वहाँ की जनता सोचती है कि यदि ये पार्टियाँ सत्ता में आ गयीं तो वे हिंदी भाषा को उन पर थोप देंगी।

4.) क्षेत्रवाद (Region) → भारत में क्षेत्रवाद मतदान को प्रभावित करता है। पंजाब में अकाली दल, महाराष्ट्र में शिव सेना, तमिलनाडु में द्रविण मुनेत्र कड़गम, बंगाल में CPM आदि क्षेत्रीय दल इसके प्रमाण हैं।

5.) व्यक्तित्व (personality) → यहाँ पर लोग personality को देखकर भी वोट देते हैं जैसे — Narendra modi, Rahul gandhi, kejareevaal आदि की personality देखकर लोग वोट करते हैं।

6.) आर्थिक व्यवस्थाएँ → आर्थिक व्यवस्था भी मतदान को प्रभावित करती है। यहाँ किसानों को यदि समुचित आर्थिक सुविधाएँ नहीं मिलती हैं तो वे सत्तारूढ़ दल के विरोध में मतदान करते हैं। इस प्रकार बेरोजगारों को रोजगार न मिलने से वे अपना मतदान उस उम्मीदवार के पक्ष में करते हैं जिनसे उन्हें रोजगार मिलने की आशा होती है। 1980 में 'गरीबी हटाओ' का नारा ही इंदिरा गाँधी की जीत का एक बड़ा कारण था।

7.) शासक दल का व्यवहार → जनता शासक दल के व्यवहार और आचरण से प्रभावित होकर मतदान करती है। 1977 में जनता पार्टी की विजय का कारण कांग्रेस सरकार द्वारा लगाया गया आपात काल था, जिसमें जनता को अनेक कष्ट सहने पड़े।

8.) राजनीतिक स्थिरता और सुदृढ़ सरकार → जनता केंद्र में स्थिर और सुदृढ़ सरकार चाहती है जिन दलों से उसे ऐसी आशा होती है उसे ही जनता वोट देती है। यही कारण है कि शुरू में कई बार कांग्रेस पार्टी और 1999 में भाजपा के नेतृत्व में राजग को वोट दिया।

9.) नेतृत्व → भारत में अच्छे नेतृत्व को महत्व दिया जाता रहा है। शुरू में नेहरूजी ने तीन बार नेतृत्व किया, उनके बाद इंदिरा गाँधी ने और अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में जनता को विश्वास है। और वर्तमान में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जनता को काफी विश्वास है।

10.) युद्ध → युद्ध में सफलता या असफलता की जनता के मतदान व्यवहार को

प्रभावित करती है। 1962 में भारत की चीन द्वारा पराजय से कांग्रेस पार्टी के विपक्ष में तथा 1971 में भारत की पाकिस्तान पर जीत से कांग्रेस के पक्ष में मतदान अधिक हुआ।

11) राजनीतिक दलों के घोषणा-पत्र → समस्त राजनीतिक दल चुनावों में घोषणा-पत्र जारी करते हैं जिसमें उनके दल के भावी कार्यक्रम और जनता के कल्याण से संबंधित नीतियाँ होती हैं। जिस दल का कार्यक्रम और नीतियाँ जनता को अच्छी लगती हैं, जनता उसी दल को मत देती है।

12) प्रत्याशी की जीत की संभावना → कौन-सा प्रत्याशी जीतेगा यह कभी-कभी धारणा बन जाती है और जीतने वाले के पक्ष में एक लहर चल जाती है; जैसे — कांग्रेस दल के पक्ष में पहले तीन आम चुनावों में लहर रही क्योंकि उसने आजादी दिलायी थी, इसी प्रकार 1977 में जनता पार्टी के पक्ष में लहर चली क्योंकि 1975 में इंदिरा सरकार ने देश में आपातकाल लगाया था।

- मतदान व्यवहार के निर्धारकों में हालिया परिवर्तन :-

हालांकि, उपरोक्त पारंपरिक निर्धारक मतदाताओं के मतदान व्यवहार को आकार देना जारी रखते हैं, समकालीन प्रासंगिकता के कुछ और निर्धारक हैं जो मतदान व्यवहार को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आज, पारंपरिक और सोशल मीडिया के माध्यम से उपलब्ध समाचार और सूचना भी हमारे मतदान निर्णयों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समाचार चैनल गर्म बहस से भरे हुए हैं जो भावनाओं को जन्म देते हैं और मुद्दों पर अधिक अंतर्दृष्टि केंद्रित है, जो बदले में मतदाताओं की धारणाओं को बदलता है। इसके अलावा, जनता के बीच सूचना प्रसारित करने में सोशल मीडिया एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।